ऐसा न बनो

इतने नरम न बनो कि
लोग तुम्हें खा जाये ।
इतने गरम न बनो कि
लोग तुम्हें छू भी न सके ।
इतने सरल न बनो कि
लोग तुम्हें मूर्ख बना दे ।
इतने जटिल न बनो कि
लोगों में तुम मिल न सको ।
इतने गंभीर न बनो कि
लोग तुमसे ऊब जायें ।
इतने छिछले न बनो कि
लोग तुम्हें नहीं मानें ।
इतने महंगें न बनो कि
लोग तुमसे भागते रहें ।
इतने सस्ते भी न बनो कि
लोग तुम्हें नयाते रहें ।

- नवास अबदुल खादीर

खल नायक

-सबीह एम

जिन्हें कभी भी मैं नही देखना चाहता
उन्हीं को देखने क्यों तरस रहे हैं
आज मेरे ये नैन ?
जिन्हें कदापि मैं नहीं सुनना चाहता
उन्हीं को सुनने क्यों तरस रहे हैं
हाय मेरे ये कान ?
मेरे होंठों पर केवल
परनिन्दा की ही बातें
हमेशा क्यों आ रही है ?
मेरे हाथ औरों को मारने और माल हडपने
क्यों सदा तड़प रहे हैं ?
मेरे पैर क्यों दूसरों को लात मारने
और कुचल देने को उठ रहे हैं ?
पापों से भरे विचार आज मेरे दिमाग को
न जाने क्यों जला रहे हैं ?

मेरे इस कलम की नोक पर बैठा
यह अपरिचित है कौन ?
जो मुझे पसन्द न हो
वह मुझसे करानेवाला और लिखवानेवाला
कहीं यह तो नहीं ;
पल-पल कई तरह सोचने को
मजबूर करनेवाला भी यही है ।
अन्याय के आगे आँखें मूँद खडे हो
अत्याचार के सामने मूँह न खोले
पर ज़ोर जबरदस्ती करनेवाला भी
यही है क्या ?
यह अपरिचित-यह अनुपम-यही है क्या?
पर यह तो अपरिचित नहीं हो सक
-क्योंकि-
केवल मुझसे ही नहीं
बल्कि
हर किसी से हमेशा
यह सब करानेवाला तो यही है
अबतो समझ में आया होगा ।
नहीं ?
नहीं तो-
लो, यह है आज की पीढी
का
आराध्य पुरुष
नायक-
नहीं, खल नायक ।